स्वयं में जगायें आत्म-विश्वास

आत्म-विश्वास ऊर्जा का वह ओजस्वी स्रोत, जीवनधारा, अमृतधारा है जो प्रत्येक क्षण आपको श्रेष्ठ कामनाओं से अभीभूत किये रहता है। आत्म-विश्वास वह अद्भुत बूटी है जो मस्तिष्क को अनुपम एकाग्रता प्रदान करके आपको श्रेष्ठ विचारों से समृद्ध करती है और सफलता की एक नवीन राह दिखाती है।

आपकी सर्वश्रेष्ठ सम्पत्ति है आपका आत्म-विश्वास, मानव-जीवन में सफलता की कुंजी है - आत्म-विश्वास।यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगा कि संसार का सबसे बड़ा चमत्कार है आपका आत्म-विश्वास। आत्म-विश्वास वह सोमरस है जिसका ग्राही व्यक्ति मदान्ध हाथी को भी वश में कर सकता है तथा असंभव लगने वाले कार्य को भी सुगमता से सम्पन्न कर सफलता प्राप्त कर लेता है। मानव की संपूर्ण सफलता का भवन आत्म-विश्वास पर ही टिका हुआ है। आत्म-विश्वास से रहित व्यक्ति का जीवन निरंतर पराजय की ओर लुढ़कता रहता है, जबकि आत्म-विश्वासी मनुष्य का जीवन अविराम गति से विजय की ओर अग्रसर होता रहता है। आत्म-विश्वास, जिसके बलबूते पर ही जीवन टिका है, पर सारा संसार थमा है। आत्म-विश्वास के बल पर ही इतिहास बदल डाले गये। नदियों की धाराएं, पर्वतों की कन्दराएं, पहाड़ियों की गुफाएं, समय की बेलायें, मौत हो या यमराज, सभी को बदलने की क्षमता रखता है - आत्म-विश्वास। इससे ही सभी खोजों का जन्म हुआ। यही पुरुष का पुरुषत्व, वीर की वीरता और विचारों की श्रेष्ठता है। आत्म-विश्वास ने ही असम्भव को सम्भव कर दिखाया। शिवाजी अकेला विशाल मुगल सेना से भिड़ गया और उन्हें परास्त किया। यही झांसी की रानी का गौरव है तो वास्कोडिगामा की खोज भी, यही मैगलिन की जनयात्रा है तो जेम्स वॉट के इंजन का आधार भी, यही जहाज़ की कहानी है तो इतिहास की कुर्बानी भी। संसार के सभी महान कार्य आत्म-विश्वास के बल पर ही हुए हैं। नैपोलियन जैसे योद्धाओं ने भी आत्म-विश्वास के बल से विजय हासिल की। आत्म-विश्वासी व्यक्ति इतिहास में अमर हो गए। उन्हें निश्चय था कि उनके स्वप्न अवश्य ही पूरे होंगे। ईसा मसीह ने कहा था - जो मुझपर विश्वास रखता है वह मेरे समान ही नहीं अपितु मुझसे बढ़-चढ़कर है। आत्म-विश्वास की गाथायें तो अमर हैं। यह कहना उचित होगा कि - हे आत्म-विश्वासी आत्मा...

मौत भी आने से पहले,
तुम्हें देख खुद मर जायेगी।

तो आइये! हम भी अपने आत्म-विश्वास को इतना दृढ़ करें कि सफलता हमारे चरणों की दासी बन जाये।

स्वयं में आत्म-विश्वास और श्रद्धा प्रत्येक कार्य के लिए आवश्यक एवं प्राथमिक गुण है। आप स्वयं को जितना योग्य समझते हैं, उसी प्रकार के आचार-विचार और भाव आपके चेहरे पर दिखाई देने लगते हैं।

मना ली दीपावाली?

- ब्र.कु.सुशील, पाण्डव भवन

रंग-बिरंगी रोशनियों से घरों को सजाया गया, पटाखे फोड़े गए, उमंग-उत्साह से एक-दो को मुबारकबाद दी गई, मिलजुलकर मिठाईयां खाकर खुशियां मनाई गई, पर्यटन स्थलों में घूम-फिरकर छुट्टियां मनाने का लुत्फ उठाया गया। बस हो गई दीपावली? नहीं..., नहीं.....। हर पल दीपावली जैसी ही नहीं बल्कि सच्ची खुशी की अनुभूति होनी चाहिए। हर मनुष्य जीवन में खुशी, सुख, शान्ति के लिए प्रयत्नशील रहता है। धर्म-कर्म, जप-तप, पूजा-पाठ, भौतिक संसाधनों का संग्रहण आदि कई तरह के प्रयास करने के बावजूद भी खुशी क्यों नहीं रह पाती है? सभी त्यौहार खुशी के लिए ही तो मनाए जाते हैं। लेकिन क्या एक दिन के त्यौहार से सदा खुशी रह सकती है? हर दिन खुशी का ग्रेड बढ़ते रहना चाहिए। अविनाशी खुशी रहनी चाहिए। यह खुशी हर श्वास में समाई रहे, चेहरे से झलकती रहे, उस विधि को जानने की ज़रूरत है। बिना विधि के सिद्धि प्राप्त नहीं होती। हर सेकण्ड आत्मदीप जगमगाता रहे, परमात्म रोशनी से आत्मदीप प्रकाशवान रहे।

परमात्मा से सर्व संबंध जोड़ने की खुशी - परमात्मा से सर्व संबंध जोड़ने से जो खुशी मिलती है उसका वर्णन शब्दो में नहीं किया जा सकता बल्कि खुद ही उससे जुड़कर उसका स्वाद चखा जा सकता है। परमात्मा का गुणगान ही नहीं बल्कि उसके साथ सर्व संबंध जोड़कर उन संबंधों का रस लेने का थोड़ा-सा समय बचा है। इसके लिए शेष बचे हुए समय में निरंतर साधना की ज़रूरत है। साधना के लिए कोई विशेष समय, कोई आसन, प्राणायाम, बैठक आदि की ज़रूरत नहीं है बल्कि कर्मो में श्रेष्ठता, वाणी में माधुर्य, व्यवहारिकता में सरलता व संतुष्टता में रहना ही साधना है।

परमात्मा के साथ जुड़े रहना अनिवार्य - सम्पूर्णता को प्राप्त करने के श्रेष्ठतम लक्ष्य को पाने के लिए ज्ञान के तीसरे नेत्र को निरंतर खुला रखना चाहिए। अज्ञान अंधकार के चलते जब तक मनुष्य बाहरी वस्तुओं के साथ अपने को संयुक्त मानता है तब तक वह अपूर्णता की अनुभूति से छुटकारा पा ही नहीं सकता अर्थात् सच्ची खुशी के अनुभव का स्वाद चख नहीं सकता। यह शरीर भी एक बाहरी वस्तु की तरह है। जिस तरह हम शरीर की तन्दरूस्ती के लिए आवश्यकतानुसार शारीरिक ज़रूरतों को पूरा करने के लिए बाहरी वस्तुओं का उपयोग करते हैं, उसी तरह से समय और परिस्थितियों के अनुसार आत्मा की ज़रूरत को पूरा करने के लिए सागर समान अलौकिक शक्तियों के भंडार पारलौकिक वस्तु परमपिता परमात्मा के साथ जुड़े रहना अनिवार्य हो गया है।

अविनाशी खुशी के लिए जगाएं आत्मदीप - जीवन में निरंतर खुश रहने के लिए आत्म व परमात्म चिन्तन करते हुए आत्मदीप को जगाए रखें अर्थात् आत्मिक स्थिति में स्थित रहें। अपने मन में इन संकल्पों को दोहराते हुए अनुभव करें कि मैं मस्तक के बीच एक चमकती हुई - अजर, अमर, अविनाशी आत्मा हूं, मैं इस विनाशी देह की मालिक हूं, मैं शरीर से भिन्न चेतन सत्ता हूं, शांत, शुद्ध, पवित्र आत्मा हूं, परमपिता शिव परमात्मा की प्रिय सन्तान हूं, परमात्मा मुझे बहुत प्यार करते हैं। मुझ आत्मा का अनादि निवास स्थान सूरज, चांद सितारों से पार परमधाम है, ब्रह्माण्ड है, शांतिधाम है। परमपिता परमात्मा के रहने का स्थान भी शांतिधाम है, महाज्योति परमपिता परमात्मा पारलौकिक शक्तियों से निरंतर जगमगा रहे हैं, निराकार ज्योतिर्बिंदू परमात्मा से निकल रही अनंत शक्तियों की रंग-बिरंगी किरणें मुझ आत्मा में समाहित होती जा रही हैं, मैं आत्मा सर्वशक्तियों से फुलचार्ज होती जा रही हूं। मैं स्वराज्य अधिकारी, शक्तिशाली आत्मा हूं। शान्ति मुझ आत्मा का स्वधर्म है, मैं शान्ति के सागर परमात्मा की शान्त स्वरूप सन्तान हूं। इस चिन्तन को बार-बार दोहराने से मन का शुद्धिकरण होगा, एकाग्रता बढ़ेगी, निरन्तर आत्मिक अनुभूति होने के साथ खुशी का पारा चढ़ा रहेगा। परमपिता से जुड़े रहने से कपारी खुशी का अनुभव होगा। जब यह खुशी हमारे चेहरे से झलकने लगेगी तब ही स्व कल्याण के साथ साथ विश्व का कल्याण होगा। याद रहे अब नहीं तो कब नहीं - जरा विचार कर लें कि कहीं हम इस अनमोल जीवन को यूं ही तो नहीं गंवा रहे हैं? कीमती समय को बर्बाद तो नहीं कर रहे हैं? चारों तरफ लगाए फेरे फिर भी हर दम दूर रहे, इस वाक्यानुसार परमात्मा से कहीं दूर तो नहीं हैं हम? क्या हमने अपने मन का कनेक्शन परमात्मा से जोड़ लिया है? ऐसे तो नहीं अनावश्यक रूप से इंटरनेट, मोबाइल, टी.वी. सिनेमा, खेलों में अपना समय व्यतीत करते हुए परमात्म प्यार से, परमात्म वरदानों से वंचित हो रहे हों? याद रहे अब नहीं तो कब नहीं।

रायपुर-छ.ग.। भाई दूज के अवसर पर राज्यपाल शेखर दत्त को आत्म स्मृति का तिलक लगाते हुए क्षेत्रीय प्रशासिका ब्र.कु.कमला। साथ हैं प्रथम महिला सुष्मिता दत्त एवं ब्र.कु.सविता।

शहादा। शान्तिदूत युवा साइकिल यात्रा के दौरान फल उत्पादक मंत्री डॉ.विजय कुमार गावित से आध्यात्मिक चर्चा के पश्चात ब्र.कु.विद्या तथा अन्य।

सहारनपुर। शाकुम्भरी देवी मेले में आध्यात्मिक चित्रों द्वारा की गई उत्कृष्ट सेवा के लिए ब्र.कु.उर्मिला को मोमेन्टो देते हुए जिला परिषद चेयरमैन अनीता चौधरी।

शान्ति सरोवर-हैदराबाद। चैतन्य देवियों की झांकी का अवलोकन करते हुए पंचायत राज मंत्री जना रेड्डी। साथ हैं शान्ति सरोवर की डायरेक्टर ब्र.कु.कुलदीप तथा अन्य।

सूरत। चैतन्य देवियों की झांकी अवलोकन के पश्चात दीप प्रज्वलित करते हुए कॉर्पोरेटर जिगीश दवे एवं ब्र.कु.लीला।

राजपुर-म.प्र.। शान्तिदूत साइकिल यात्रा के आगमन पर दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए विधायक दैवीसिंह पटेल, समाजसेवी नानेश चौधरी, ब्र.कु.आशा, ब्र.कु.प्रमिला एवं ब्र.कु.रंजना।